शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३० : नई दिल्ली : २८ अक्टूबर से ३ नवम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ६०, सर्व १४२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। यह चतुर्मास का उत्तरार्द्ध है। अ.भा.तेयुप का वार्षिक अधिवेशन, अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर, सापेक्ष अर्थशास्त्र सेमिनार और दीक्षा समारोह इस चतुर्मास के अवशेष प्रमुख कार्यक्रम हैं। यात्री कुटीर अभी भी जनसंकुल हैं। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है।

समझो पापों को-१३

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में 'अब्भक्खाण' शब्द आता है। अठारह पापों में तेरहवां पाप है--अभ्यायाख्यान पाप। आचार्य हेमचन्द्र ने इसका अर्थ किया है--**मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानं**--झूठा अभियोग लगाना, झूठा आरोप लगाना अभ्याख्यान होता है। वास्तव में गलती हो, दोष हो तो भी बात को फैलाना नहीं चाहिए, किसी को बदनाम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। गलती है ही नहीं और ऐसे ही किसी निर्दोष आदमी को दोषारोपित कर देना और झूठा दोष फैला देना बड़ा पाप होता है। दुर्जन आदमी ही ऐसा काम कर सकता है। सज्जन आदमी तो दोष का पता चल जाए तो भी उसे फैलाने का या उस आदमी को बदनाम करने का प्रयास नहीं करता।

दुर्जन आदमी के अपने लक्षण होते हैं। संस्कृत वाङ्मय में कहा गया--

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

दुर्जन आदमी के पास विद्या विवाद के लिए, धन अहंकार के लिए और शक्ति दूसरों को पीड़ित करने के लिए होती है, जबकि सज्जन आदमी के पास विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

दुर्जन आदमी के पास विद्या है तो वह विवाद पैदा और झगड़ा-कलह पैदा करने का प्रयास कर सकता है। यद्यपि विद्या का होना अच्छा है, क्योंकि विद्या एक संपदा है, वैभव है, किन्तु विद्या से अनावश्यक विवाद नहीं करना चाहिए। विद्या से विवाद नहीं संवाद करें। एक सज्जन आदमी के पास विद्या है तो वह उसका उपयोग अध्ययन में कर सकेगा, दूसरों को पढ़ा सकेगा, दूसरों को ज्ञान दे सकेगा।

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।।

विद्या का भण्डार अपूर्व है, उसे जितना-जितना व्यय किया जाता है, वह बढ़ता है। विद्या को संचित करके रखोगे, उपयोग नहीं करोगे तो उसका लोप हो जाएगा। हमारे पास विद्या है तो हम उसके द्वारा दूसरों को ज्ञान देने का प्रयास करें। उसे सुयोग्य लोगों में बांटें, उसके द्वारा दूसरों को संबुद्ध करें। कोई समस्या हो तो विद्या के द्वारा उसका समाधान करें। किसी के कार्य में बाधा डालने, विवाद खड़ा करने में उसका उपयोग न करें। विद्या का अहंकार भी नहीं करना चाहिए।

किसी संस्था की मीटिंग हो रही थी। उसमें कोई प्रस्ताव पारित करना था। मीटिंग के सदस्यों में एक पढ़ा-लिखा युवक भी था। जब प्रस्ताव पारित करने का समय आया तो उसने ऐसी वैसी बातें करनी शुरू कर दीं, जिससे प्रस्ताव पारित न हो सके। कुछ अन्य लोग भी उसके साथ हो गए, आखिर प्रस्ताव पारित ही नहीं हो सका। मीटिंग संपन्न हो गई तो कुछ लोगों ने उस युवक से कहा--'सब कुछ ठीक चल रहा था भाई, तुमने बीच में विवाद क्यों पैदा कर दिया? कम-से-कम जरूरी प्रस्ताव तो पारित करने दिया होता।'

उस युवक ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा--'फिर आप लोगों को पता कैसे चलता कि मैं कितना पढ़ा-लिखा और तेज दिमाग वाला हूं। अभी आप लोगों ने देखा, मैंने कैसे पासा पलट दिया? मुझे आसानी से कोई नजरंदाज नहीं कर सकता। वैसे आप चाहें तो कल फिर मीटिंग रख लें। मैं कल उसमें भाग नहीं लूंगा, आप लोग प्रस्ताव पारित करा लें।'

इस प्रकार व्यर्थ में अपनी विद्या के द्वारा विवाद पैदा नहीं करना चाहिए। उसका उपयोग तो विवाद को सुलझाने और शान्ति स्थापित करने में करना चाहिए। दुर्जन के पास धन है तो वह उसका अहंकार करता है। धन का उपयोग वह अपने अहं को पोषण देने हेतु करता है। उसका धन दान में नहीं, अहंकार को बढ़ाने में, भोग विलास की सामग्री के संचयन में, दूसरों को पीड़ित प्रताड़ित करने के काम आता है अथवा निरर्थक उसकी तिजोरी में पड़ा रहता है। धन की तीन गतियां बताई गई हैं--

दानं भोगो नाशः तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

दान, भोग और नाश--धन की ये तीन गतियां हैं। धन का यदि दान नहीं दिया जाता, उसका भोग नहीं किया जाता तो उसकी तीसरी गति, अर्थात नाश हो जाता है।

एक वृद्धा भिखारिन दिन भर भीख मांगा करती थी। भीख ही उस वृद्धा की जीविका का साधन था। एक बार अतिवृष्टि की स्थिति बन गई। बाढ़ से हजारों लोग प्रभावित हुए। जगह-जगह बाढ़ पीड़ितों के लिए सहायता कैम्प लगाए गए। भोजन के पैकेट बांटे जाने लगे। उसमें 'सूंखड़ी' नाम की खाद्य सामग्री प्रमुख रूप से वितरित की जाती। एक कैम्प में सूंखड़ी बनाई जा रही थी तभी वह वृद्धा भिखारिन वहां आकर बार-बार ताक-झांक करने लगी। कैम्प के कार्यकर्ताओं ने कड़ाई से उसे डांट कर कह दिया कि वह यहां से चली जाए, क्योंकि यह भोजन बाढ़पीड़ितों के लिए बनाया जा रहा है। उसमें उसे कुछ नहीं मिलेगा।

भिखारिन ने कहा--'बेटा मैं भोजन मांगने नहीं आई। मैं तो यह कहने के लिए आई हूं कि दिन भर की भिक्षा में यह जो कटोरा भर आटा मिला है, उसे भी सहायता के खाद्यान्न में मिला लिया जाए तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।' यह लौकिक अनुकंपा की भावना है। वृद्धा भिखारिन विपन्न है, अपनी स्थिति से स्वयं दुःखी है, किन्तु बाढ़पीड़ितों के दुःख को वह अपने दुःख से बड़ा मानती है।

दान लौकिक भी होता है और लोकोत्तर भी होता है। किसी साधु को दान दें तो वह लोकोत्तर दान है और जरूरतमंद किसी बुभुक्षित व्यक्ति को दान दें तो वह लौकिक दान है। दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। दुर्जन आदमी के पास शक्ति है, ताकत है तो वह उसका उपयोग दूसरों को कष्ट देने में कर सकेगा, दूसरों को हानि पहुंचाने में कर सकेगा, दूसरों का हक छीनने में कर सकेगा। सज्जन व्यक्ति अगर धन-धान्य से संपन्न है, समर्थ है तो वह अपनी शक्ति का प्रयोग जनकल्याण में कर सकेगा, दूसरों की सहायता में कर सकेगा।

करुणाशील लोगों का शरीर परोपकार से शोभित होता है, चन्दन लगाने से शोभित नहीं होता, न ही सुन्दर आभूषण पहनने से होता है। संस्कार, सेवा, परोपकार को अपना आभूषण बनाना चाहिए।

किसी पर दोषारोपण करना, लांछन लगाना, अहित करने की चेष्टा करना दुर्जनता है। सज्जन व्यक्ति तो ज्ञाता-द्रष्टाभाव से अच्छे-बुरे को देखता है। वह निन्दा और चुगली में नहीं जाता। दसवेआलियं में एक कथा आती है--

एक व्यक्ति परस्त्री के साथ मैथुन सेवन कर रहा था। किसी साधु ने उसे देख लिया। वह लज्जित हुआ और सोचने लगा कि साधु दूसरों से मेरे कृत्य के बारे में कह देगा, इसलिए मैं क्यों न उसे मार डालूं? उसने आगे जाकर मार्ग रोका और मौका देखकर साधु से पूछा--'आज तुमने मार्ग में क्या देखा?

साधु ने कहा--

बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ।।

भिक्खु कानों से बहुत कुछ सुनता है और आंखों से बहुत कछ देखता है, किन्तु सब देखे और सुने हुए को कहना भिक्खु के लिए उचित नहीं होता।' युवक को विश्वास हो गया कि यह वास्तव में साधु है और मेरे कृत्य को प्रचारित कर मुझे बदनाम नहीं करेगा। साधु को छोड़कर वह अपने गंतव्य की ओर चला गया।

परमपूज्य महामना आचार्य भिक्षु एक विशिष्ट कोटि के संत थे। उनके पास एक बार एक जैन साधु आया। एकान्त में उसने कुछ बात की और चला गया। उसके जाने के बाद मुनि हेमराजजी ने आचार्य भिक्षु से पूछा--'गुरुदेव! वह साधु क्यों आया था और उसने आपसे क्या बात की?'

आचार्य भिक्षु ने कहा--'वह अपने दोष की आलोचना करने आया था।'

शिष्य हेमराजजी ने पुनः पूछा--'गुरुदेव! उसने किस तरह के दोष का सेवन किया था?'

आचार्य भिक्षु ने कहा--'यह बताना मुझे कल्पता नहीं।'

किसी की गुप्त बात को, किसी की त्रुटि या गलती को फैलाना, प्रचारित करना सज्जनता नहीं होती। इस तरह के अभ्याख्यान पाप से बचना चाहिए। परदोष दर्शन और उसे प्रचारित करने की वृत्ति चाहे साधु में हो या गृहस्थ में भगवत्ता की प्राप्ति में एक बाधा है।

एक व्यक्ति छोटी अवस्था में ही साधु बन गया। बस्ती को छोड़ वह जंगल में चला गया और वहीं कुटिया बनाकर रहने लगा। दस-बारह वर्ष बीत गए, फिर भी उपलब्धि के नाम पर कुछ भी नहीं। धैर्य जवाब दे गया। उसने सोचा--'इतने लंबे समय तक साधना की, फिर भी भगवान के दर्शन नहीं हुए। क्या फायदा ऐसे साधु जीवन से? राम-नाम कुछ नहीं है। मैंने बारह वर्ष का समय व्यर्थ में गंवाया। साधना के पीछे सांसारिक सुखों से भी वंचित रहा। अच्छा हुआ समय रहते वास्तविकता का पता चल गया। क्या रखा है संन्यास में? सुख तो संसार में है--ऐसा सोचकर उसने संन्यासी का चोला उतार दिया और फिर से गृहस्थ बन गया।

जिनके पास धैर्य नहीं, संकल्प बल मजबूत नहीं, चित्त जिनका चंचल है, साधना उनके लिए कठिन हो जाती है। साधु जीवन छोड़ वह व्यक्ति अपने गांव की ओर रवाना हो गया। चलते-चलते गांव निकट आ गया। गांव से पहले उसे एक दुकान दिखाई दी। वह वहां चला गया। उसने देखा दुकान में अनेक पीपे रखे हैं, उन पर तरह-तरह की वस्तुओं के नाम लिखे हैं। उसने उन पीपों और उन पर लिखी वस्तुओं के नाम के बारे में दुकानदार से जिज्ञासा की तो उसने कहा--'इन पीपों में अलग-अलग चीजों के नाम मैंने अपनी सुविधा के लिए लिखे हैं। इससे ग्राहक के मांगने पर तत्काल उस वस्तु को निकाल कर दे देने में मुझे सुविधा रहती है। अगर नाम न लिखे हों तो एक-एक कर कितने ही पीपों को संभालना पड़े तब कहीं जाकर जरूरत की चीज मिल पाए।'

संन्यासी से गृहस्थ बने व्यक्ति को दुकानदार का यह आइडिया अच्छा लगा। तभी उसकी दृष्टि

कुछेक ऐसे पीपों पर पड़ी, जिन पर कुछ नहीं लिखा था। उसने दुकानदार से पूछा--'इनमें क्या है?' दुकानदार ने कहा--'इनमें तो राम-राम है।' जिज्ञासु व्यक्ति ने कहा--'इसका क्या मतलब?' दुकानदार ने कहा--'मतलब बहुत गहरा है। जिस डिब्बे में कुछ नहीं होता, खाली होता है, हम अपनी कूट भाषा में कहते हैं, उसमें राम-राम है। जिसमें कुछ नहीं है, भीतर से जो खाली है, हमारी दृष्टि में उसमें राम-राम है।'

संन्यास छोड़ कर घर आ रहे व्यक्ति के चिंतन को एक झटका-सा लगा। उसने सोचा--दुकानदार ने तो यह गजब की बात बता दी। जो खाली है राम उसी में है। मैं खाली कहां था, मैं तो भरा हुआ था। क्रोधरूपी मिर्च, अहंकाररूपी नमक, आकांक्षारूपी तेल, वासनारूपी गुड़--सब तो मेरे भीतर भरे हैं, फिर राम मुझे कैसे मिलते? राम से मिलना है तो खाली बनना पड़ेगा, यह सूत्र उसकी समझ में आ गया। प्रेरणा जागी और डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। वह जंगल की ओर वापस मुड़ा, अपनी कुटिया में आया और भीतर से खाली होने की साधना करने लगा।

भीतर के परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिए हमें अभ्याख्यान को छोड़ना है। हम आत्मालोचन करें, मन को प्रशिक्षित करें और कल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

नशामुक्त जसोल अभियान

१५ अक्टूबर। नशामुक्त जसोल अभियान के अन्तर्गत प्रवास स्थल से दो किमी. दूर बाबा रामदेव मन्दिर के बाहरी चौक में विभिन्न वर्ग के लोगों के बीच पूज्य आचार्यप्रवर का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। आचार्यवर ने सबको नशामुक्त बनने का आह्वान किया। देखते ही देखते गुरुदेव के उपदेश से प्रभावित होकर नशामुक्त बनने की चाह रखने वालों की कतार लग गई। आचार्यवर के प्रवचन के पूर्व व पश्चात् मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल), मुनि जितेन्द्रकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। मन्दिर के अध्यक्ष श्री पुखराज बोकड़िया, पूर्व प्रधानाध्यापक श्री मोहनलाल खंडेलवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की संपन्नता के बाद प्रवास स्थल की ओर लौटते हुए मन्दिर प्रबंधकों के विशेष निवेदन पर पूज्यप्रवर माता श्रीयादे मन्दिर में भी पधारे।

६३वां अणुव्रत वार्षिक अधिवेशन संपन्न

१५ अक्टूबर। अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता की पावन सन्निधि में ६३वें अणुव्रत वार्षिक अधिवेशन के समापन कार्यक्रम का समायोजन। प्रातःकालीन मुख्य सत्र में मुनि विजयकुमारजी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री संपत श्यामसुखा ने अधिवेशन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने महासमिति द्वारा संचालित गतिविधियों की अवगति देते हुए घोषणा की--'अणुव्रत पर शोध करने वालों को एक लाख रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।' अणुव्रत पाक्षिक के संपादक श्री महेन्द्र जैन ने अणुव्रत के 'आर्थिक शुचिता विशेषांक' की रूपरेखा व उसके संभावित प्रभाव पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया ने कहा--'देश आज जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है, उसमें अणुव्रत का अत्यन्त महत्त्व है। राजनीति में शुचिता का मैं स्वयं पालन करने का प्रयास करता हूं। इसके बिना व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर सुधार और कल्याण संभव नहीं है।'

मंत्री मुनिश्री ने अणुव्रत को सामूहिक और व्यक्तिगत जीवन की आचारसंहिता बताते हुए कहा--'जीवन में धन का अंबार भले ही न हो, विश्वास का अंबार होना चाहिए। सत्य में आस्था ही जीवन का सार है।' शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने वक्तव्य में जीवनविज्ञान के बारे में जानकारी दी।

अणुव्रत अनुशास्ता पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'संयम अणुव्रत की आत्मा है। संयम को पृथक् करने के बाद अणुव्रत में कुछ नहीं बचेगा। साधु और गृहस्थ का संयम अलग-अलग स्तर का होता है। दोनों की अपनी-अपनी सीमाएं हैं। साधु महाव्रतों का पालन करता है, जबकि गृहस्थ के लिए अणुव्रत पालनीय है। गृहस्थ अपनी सीमा में संयम का पालन करता है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी ने कितने लोगों को प्रेरणा दी। उनके मन में अणुव्रत के प्रति लगाव था। वे लोगों को नशे जैसी बुराई से मुक्त होने के लिए प्रेरित करते थे। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तन के बाद उन्होंने कितने-कितने कार्यकर्ताओं का निर्माण किया। व्यक्ति के जीवन में संयम और सादगी रहे, यह बहुत जरूरी है। सामाजिक स्तर पर कोई अच्छा परिवर्तन आता है तो उसका प्रभाव अलग ही होता है।'

आचार्यवर ने कहा--'गुलाबजी कटारिया श्रावक हैं। राजनीति में पद स्थायी नहीं भी होता, पर श्रावकत्व तो स्थायी रह सकता है। आर्थिक शुचिता की तरह राजनीतिक शुचिता भी बनी रहे।' पूज्यप्रवर ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा--'कार्यकर्ता पूरे उत्साह के साथ अणुव्रत का कार्य करते रहें। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष में अणुव्रत के कार्यक्रम को व्यापक बनाना है।' अणुव्रत पाक्षिक के आर्थिक शुचिता विशेषांक के सन्दर्भ में आचार्यवर ने कहा--'विशेषांक को अभी पढ़ा तो नहीं है, पर यह विषय अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज आठ कार्यकर्ताओं को **'अणुव्रतसेवी'** के रूप में संबोधित किया। संबोधन प्राप्तकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं--श्री जवाहर श्रीमाल (जोधपुर), श्री गणपत धर्मावत (राजसमन्द), श्री जसराज चोरड़िया (लाछुड़ा), श्री कल्याणमल गोखरू (आसीन्द), प्रो. धर्मचन्द जैन (भीलवाड़ा), डॉ. गोपाल आचार्य (बीकानेर), श्री महावीरप्रसाद सेवदा (रतनगढ़), श्रीमती सुशीला सिन्हा (देवघर-झारखंड)। पूज्य आचार्यप्रवर ने स्व. श्रीमती कान्ता बड़ोला (राजसमन्द) को **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

अणुव्रत महासमिति के इस त्रिदिवसीय अधिवेशन में प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया। विभिन्न सत्रों में अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र जैन (जयपुर), श्री राजेन्द्र सेठिया (गंगाशहर), श्री बजरंग जैन (बेंगलुरु) एवं प्रो. धर्मचन्द जैन (भीलवाड़ा) ने प्रशिक्षण दिया। विभिन्न अणुव्रत समितियों की ओर से प्रति विवरण प्रस्तुत किया गया। महासमिति की साधारण सभा भी अधिवेशन के दौरान रखी गई। कवि गोष्ठी का भी आयोजन हुआ। अधिवेशन में विभिन्न प्रान्तों से आए दो सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आचार्यवर द्वारा पूर्व में **'अणुव्रतसेवी'** के रूप में संबोधित कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया।

आध्यात्मिक नवाह्निक अनुष्ठान

१६ अक्टूबर। आज से आध्यात्मिक नवाह्निक अनुष्ठान का प्रारंभ हुआ। अनुष्ठान के अंतर्गत निर्धारित मंत्रों का पूज्य आचार्यप्रवर ने सस्वर पाठ किया। पंडाल में उपस्थित लोग भी इसमें संभागी बने। मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में स्वाध्याय की उपादेयता को रेखांकित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'नवरात्र में अपने-अपने ढंग से लोग आराधना करते हैं। इन दिनों अपने यहां नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान चलता है। इस अनुष्ठान के अंतर्गत 'उक्कित्तणं' के कुछ चरणों का लयबद्ध पाठ किया जाता है। इसे **'लोगस्स'** भी कहते हैं। इसके अन्तिम

श्लोक का प्रथम चरण है--**'चन्देसु निम्मलयरा'**--अर्थात् सिद्ध भगवान चन्द्रमा से भी अधिक निर्मल हैं। चन्द्रमा निर्मलता व शीतलता का प्रतीक है। साधक में निर्मलता का विकास हो। हमारी आत्मा के साथ अनादिकाल से संपृक्त है--कषाय। यह हमारी साधना को मलिन बनाता है। व्यक्ति ऐसा चिंतन करे--सिद्ध भगवान की भांति मेरे भीतर भी निर्मलता का विकास हो।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'नवरात्र में किसी कामना के साथ साधक साधना करता है। कामनाएं तीन प्रकार की होती हैं। किसी के अनिष्ट की भावना करना अधम कामना है। मध्यम कामना वह है, जिसमें व्यक्ति न तो किसी का बुरा चाहता है, न ही आध्यात्मिक विकास की कामना करता है। वह मात्र अपने भौतिक विकास हेतु भावना करता है। उत्तम कोटि की कामना में दूसरों के आध्यात्मिक विकास की भावना की जाती है। हमारे भीतर निर्मलता व पवित्रता की अभिवृद्धि का प्रयास चलता रहे, यही हमारे लिए श्रेयस्कर है।'

सिद्ध और सूर्य

१७ अक्टूबर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में 'उक्कित्तणं' के **'आइच्चेसु अहियं पयासयरा'** को व्याख्यायित करते हुए कह--'सिद्ध आदित्य से अधिक प्रकाशकर होते हैं। वे ज्योतिपुंज और ज्ञानपुंज होते हैं। उनसे बढ़कर कोई ज्ञानी नहीं होता। सिद्ध भगवान की महिमा सूर्य से ज्यादा है। सूर्य तो यथासमय अस्त हो जाता है, किन्तु सिद्ध तो कभी न अस्त होने वाले सूर्य हैं। सूर्य पर राहु का भी आक्रमण हो सकता है, लेकिन सिद्ध पर कोई आक्रमण नहीं किया जा सकता। सूर्य एक साथ संपूर्ण जगत को प्रकाशित नहीं कर सकता, जबकि सिद्धों के ज्ञानालोक से एक साथ पूरी दुनिया आलोकित हो जाती है। सूर्य कभी बादलों से आच्छादित हो जाता है, किन्तु सिद्धों की तेजस्विता कोई कम नहीं कर सकता।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'हमें सारभूत ज्ञान के अर्जन का प्रयत्न करना चाहिए। स्वाध्याय के समान दूसरा कोई तप नहीं होता। स्वाध्याय से ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान प्रकाशकर होता है। ज्ञानदान भी एक बड़ी सेवा होती है। अपने ज्ञान को वृद्धिंगत करते हुए हम दूसरों को भी सद्ज्ञान देने का प्रयास करते रहें।'

नवाह्निक अनुष्ठान 'आराधना' के क्रम में आज दूसरा दिन। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने जप करवाया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

श्रेयस्कर है गाम्भीर्ययुक्त जीवन

१८ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'दुनिया में सिद्धों से बढ़कर कोई जीव नहीं है। संसारी जीव जन्म-मरण के चक्कर में घूम रहे हैं। सिद्ध जन्म-मरण की परम्परा से मुक्त होते हैं। उनका आत्मस्वरूप प्रकट हो जाता है। संसारी जीवों की आत्मा कर्मों से आवृत रहती है और सिद्धों की आत्मा कर्मावरण से पूर्णतया मुक्त होती है। संसारी जीवों में केवलज्ञानी मनुष्य वीतरागी होते हैं, किन्तु उन पर भी चार अघाती कर्मों का आवरण रहता है।'

सिद्धों के विशेषण 'सागरवर गंभीरा' पद की व्याख्या करते हुए आचार्यवर ने कहा--'सिद्ध भगवान सागर की तरह गंभीर होते हैं। व्यक्ति के भीतर ज्ञान की गहराई और आचार की ऊंचाई होनी चाहिए। संस्कृत श्लोक में कहा गया है कि पर्वत में ऊंचाई होती है, पर गहराई नहीं होती और सागर में गहराई होती है, किन्तु ऊंचाई नहीं होती। मनस्वी व्यक्ति के जीवन में दोनों होने चाहिए। व्यक्ति को तत्त्व की गहराई में जाने का तथा किसी एक अथवा एकाधिक विषय में विशेषज्ञता हासिल करने का प्रयत्न करना

चाहिए। किसी विषय का विशेषज्ञ बनने हेतु उसके प्रति निष्ठा व समर्पण का भाव आवश्यक होता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के बिना व्यक्ति के लिए ज्ञान की गहराई में जाना संभव नहीं होता।'

पूज्यप्रवर ने गंभीरता के पांच आयाम प्रस्तुत करते हुए कहा--'गंभीरता के पांच आयाम हैं--

- ज्ञान की गहराई
- चिन्तन की गहराई
- बात को पचाने की क्षमता
- किसी की भलाई कर उसे विज्ञापित नहीं करना
- हास्य पर नियंत्रण

इन पांच आयामों के द्वारा गंभीरता को आत्मसात किया जा सकता है और गाम्भीर्ययुक्त जीवन व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर होता है।'

नवाह्निक अनुष्ठान आराधना का तीसरा दिन। पूज्य आचार्यवर ने कार्यक्रम में अनुष्ठान का प्रयोग करवाया। मंत्री मुनिश्री का उद्‌बोधन हुआ। मैसूर से समागत संघ की ओर से वहां के तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं रखीं। श्री कमल पटावरी ने भी गीत का संगान किया।

कषाय विजय : सब रोगों की एक दवा

१६ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में 'उक्कित्तणं' के **'आरोग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु'** की व्याख्या करते हुए कहा--'व्यक्ति के मन में आरोग्य की कामना रहती है। उसके लिए वह प्रयत्न भी करता है। शारीरिक स्वास्थ्य का अपना महत्त्व है तो मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य भी महत्त्वपूर्ण है। सातवेदनीय का उदय है तो व्यक्ति स्वस्थ और असातवेदनीय कर्म का उदय है तो व्यक्ति अस्वस्थ हो जाता है। संस्कृत श्लोक में देहप्रसाद, मनःप्रसाद और दृष्टिप्रसाद की कामना की गई है। शरीर, मन और दृष्टि की प्रसन्नता का अर्थ है तीनों की स्वस्थता। रसना विजय, समताभ्यास और अनाग्रह के द्वारा क्रमशः शरीर, मन और दृष्टि की स्वस्थता को प्राप्त किया जा सकता है।'

'उक्कित्तणं' के पद की व्याख्या के अंतर्गत आचार्यवर ने कहा--'आरोग्य के साथ बोधि की भी याचना की गई है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक्‌दृष्टि और सम्यक् चारित्र--ये तीन बोधियां होती हैं। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधना जितनी निर्मल होगी, भव-भ्रमण उतना ही कम हो सकेगा। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने कहा था कि समाधि की प्राप्ति में तीन बाधाएं होती हैं--व्याधि, आधि और उपाधि। जो इन तीनों से मुक्त रहता है, वह समाधि को प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति स्वयं समाधि में रहने और दूसरों को भी समाधि में पहुंचाने का प्रयास करे।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'गृहस्थ जीवन में भौतिक संपदा अपेक्षित होती है, किन्तु आध्यात्मिक संपदा उससे बहुत बड़ी होती है। भौतिक संपदा तो केवल वर्तमान जीवन में काम आ सकती है, किन्तु आध्यात्मिक संपदा तो अगले जन्म में भी काम आ सकती है। कषाय विजय का अभ्यास होता है तो आरोग्य, बोधि और समाधि--तीनों प्राप्त हो सकते हैं। सब रोगों की मानों एक ही दवा है--कषाय विजय। इसलिए कषाय विजय की साधना का अभ्यास करना चाहिए। यदि कषाय पुष्ट होता है तो अध्यात्म की साधना कमजोर हो जाती है और यदि अध्यात्म साधना परिपुष्ट होती है तो कषाय कृश बन जाता है। दोनों में बहुत विरोध है। हम मोह से बचते हुए मोक्ष के प्रकाश को प्राप्त करने का प्रयास करें।'

नवाह्निक अनुष्ठान 'आराधना' के चतुर्थ दिन के कार्यक्रम में आचार्यवर द्वारा जनता के लिए निर्धारित प्रयोग करवाया गया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। केसिंगा समणीकेन्द्र की यात्रा

कर गुरुदर्शन करने वाली समणी शीलप्रज्ञाजी की सहवर्तिनी समणी विपुलप्रज्ञाजी ने भावाभिव्यक्ति दी। केसिंगा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शंभूलाल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। हैदराबाद से समागत संतोष मंडल के सदस्यों ने गीत का संगान किया।

महत्त्वपूर्ण है ज्ञान और आचार का योग

२० अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवों के दो प्रकार हैं--सिद्ध और संसारी। संसारी जीव संसरणशील होते हैं। वे जन्म-मत्यु के चक्र में परिभ्रमण करते रहते हैं। जो साधना करते हुए इस चक्र से मुक्त हो जाते हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं। अध्यात्म साधना का परम लक्ष्य है--सिद्धि को प्राप्त करना। हमारी आत्मा अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण कर रही है। अभव्य जीव कभी मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकते, भव्यात्मा ही संसार से मुक्त हो सकती है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'सम्यक्ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की आराधना सिद्धि का मार्ग है। यदि कोरा शील है, सम्यक्ज्ञान नहीं है अथवा कोरा सम्यक्ज्ञान है, शील नहीं है तो मुक्ति संभव नहीं होती। सम्यक्ज्ञान और सम्यक् आचार--दोनों का योग होने पर ही संसाररूपी अटवी को पार किया जा सकता है। ज्ञान और आचाार--इन दोनों का अपना-अपना महत्त्व है, किन्तु ज्ञानयुक्त आचार और आचारयुक्त ज्ञान अधिक महत्त्वपूर्ण होता है।'

नवाह्निक अनुष्ठान आराधना का आज पांचवां दिन। कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यवर ने निर्धारित जप का प्रयोग करवाया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश हेतु समुद्यत औरंगाबाद की सुश्री अंकिता सेठिया ने आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। श्री गौतम बंब (सिंधनूर) ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

भक्ति में शक्ति होती है।

२१ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में 'मूल्य भक्ति का' विषय पर प्रवचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'जीवन में भक्ति का बड़ा मूल्य है। जिसके प्रति आस्था होती है, उसके प्रति भक्ति का भाव मुखर बनता है। यह साधना का एक प्रयोग है। जैन शासन में वीतराग के प्रति श्रद्धा रखने और भक्ति करने का बहुत महत्त्व है। अर्हत् देव, शुद्ध साधु गुरु व जिनप्रज्ञप्त तत्त्व धर्म होता है। भक्ति अंतरंग और घनीभूत होनी चाहिए। गुरु व धर्मशासन के प्रति भक्ति होना जीवन की उपलब्धि है। अपने इष्ट के प्रति व्यक्ति के मन में तादात्म्य भाव बना रहना चाहिए। जगत में गुरु का स्थान बहुत ऊंचा होता है। उनसे मार्गदर्शन मिलता है। उनकी स्तुति करना, उनके प्रति समर्पण का भाव रखना एवं उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके चलना भक्ति है। गुरुभक्त शिष्य भी अपने आप में महान होता है। भक्ति में शक्ति होती है। शुद्ध भावनायुक्त भक्ति विशिष्ट होती है।'

जप को भक्ति का माध्यम बताते हुए भक्तवत्सल आचार्यवर ने कहा--'जप भक्ति का एक सशक्त माध्यम है। आत्मकल्याण हेतु नवकार मंत्र पवित्र व विशिष्ट मंत्र है। इस मंत्र के प्रति हमारे मन में गहन आस्था का भाव रहे। हमारा मूल लक्ष्य आत्मकल्याण है, साथ में बिघ्न-बाधाएं भी टल सकती हैं।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ। बालोतरा के उपखंड अधिकारी श्री कमलेश आबूसरिया ने टापरा मर्यादा महोत्सव के पोस्टर एवं होर्डिंग्स का लोकार्पण किया। इस संदर्भ में टापरा प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री रावतमल गोठी ने जानकारी दी। केसिंगा के श्री भरतराज जैन की सुपुत्री आंचल जैन ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था में मुमुक्षु के रूप में प्रविष्ट होने पर पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया।

अभातेयुप के सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़ ने आगामी अधिवेशन पर प्रदान किए जाने वाले वर्ष २०१२ के पुरस्कारों के चयन की घोषणा की। 'युवा गौरव' के लिए श्री कमल दूगड़ (कोलकाता), 'आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' के लिए श्री पन्नालाल पुगलिया (जयपुर) तथा श्री इन्द्रचन्द दुधेड़िया (बेंगलुरु), 'आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार' के लिए डॉ. प्रकाश छाजेड़ (बेंगलुरु), 'श्रेष्ठ कार्यकर्ता' के लिए श्री प्रदीप बोथरा (रायसिंहनगर), श्री मुकेश कोठारी (अहमदाबाद), श्री रमेश कोठारी (बेंगलुरु), श्री निर्मल गोखरू (भीलवाड़ा) के नामों की घोषणा हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

जैन दर्शन, विज्ञान एवं साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

२२ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्यवर की पावन सन्निधि में 'जैन दर्शन, विज्ञान एवं साहित्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी संयोजक डा. नारायणलाल कच्छारा ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। आगममनीषी प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी, जैविभा इंस्टीट्यूट मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। स्मारिका 'चिन्तन' का लोकार्पण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भारतीय विद्याओं में एक विद्या है जैन विद्या। जैन आगमों एवं अन्य ग्रंथों के माध्यम से यह अवगति मिल सकेगी कि जैन विद्या कितनी समृद्ध विद्या है। एक भगवतीसूत्र को ही कोई सांगोपांग एवं आद्योपान्त पढ़ लें तो उसका काफी रसास्वादन कर सकता है। कौन-सा ऐसा प्रचलित विषय होगा जो भगवतीसूत्र में वर्णित होने से अस्पृष्ट रह गया हो। भगवती पर भाष्य आलेखन में परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ ने श्लाघ्य परिश्रम किया था। अभी इसका केवल हिन्दी संस्करण प्रकाश में आ रहा है। यह कार्य प्रायः संपन्न हो गया है।'

जैनदर्शन, विज्ञान एवं साहित्य पर आयोजित संगोष्ठी को महत्त्वपूर्ण बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'मेरे मन में यह भावना आई है कि चतुर्मास में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी जैनविद्या पर आयोजित हो। उसमें विद्वानों की संगीति हो जाए। यह जैनविद्या की एक सेवा होगी।'

जैन विश्वभारती और जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट मान्य विश्वविद्यालय के संदर्भ में अनुशास्ता ने कहा--'जैन विश्वभारती को मैं महत्त्वपूर्ण संस्था मानता हूं। गुरुदेव तुलसी ने इसे 'कामधेनु' कहा। यह अच्छा शब्द है। मैंने इसके लिए 'जयकुंजर' शब्द प्रयुक्त किया। जय विजेता हस्ती की भांति यह समृद्ध है। इसी से संबद्ध है जैन विश्वभारती संस्थान-मान्य विश्वविद्यालय। यहां से जैन विद्या की सेवा की जा रही है। रेगुलर व पत्राचार के माध्यम से कितनों ने यहां अध्ययन किया है व कर रहे हैं। इंस्टीट्यूट के बारे में मेरी सोच है कि इसके समस्त कार्यों में जैन विद्या इसके केन्द्र में रहनी चाहिए। इस संस्थान के साथ 'जैन' शब्द लगा हुआ है, इसलिए जैन विद्या के अध्ययन, अध्यापन एवं संप्रसार को यहां प्रमुखता मिले, यह वांछनीय है।'

शोध के स्वरूप की चर्चा करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'शोध कार्य में गहराई होनी चाहिए। इसमें डाक्टरेट की उपाधि मिल जाए, ठीक है, पर मूल लक्ष्य तलस्पर्शी अध्ययन होना चाहिए। शोध ऐसा हो, जिसमें श्रम व दिमाग लगे, प्रज्ञा लगे, फिर चाहे वह सौ पृष्ठों का ही क्यों न हो। वह अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। दस-पन्द्रह ग्रंथों से उठाकर कुछ दिया जाता है तो वह मात्र संकलन हो जाएगा। शोधकार्य का मुख्य लक्ष्य उपाधि पाना न रहे। अपनी प्रज्ञा से शोधकार्य को प्रस्तुत करने का लक्ष्य रहे, यह महत्त्वपूर्ण है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अन्य व्यस्तताओं के चलते इस संगोष्ठी में मेरा आना तो कम संभव हो सकेगा। बहुश्रुत मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता के साथ वहां विद्वानों के बीच रहने का प्रयास करें। मुनिश्री का अपना वैदुष्य और अपनी प्रतिभा है, उसका उपयोग हो सकेगा।

ये विज्ञान से भी जुड़े हुए हैं। संगोष्ठी खूब सफलता के साथ चले।'

'चिन्तन' स्मारिका के बारे में आचार्यवर ने कहा--'यह जानकारी देने वाली स्मारिका बने।' आगमों के अंग्रेजी अनुवाद के प्रोजेक्ट को आचार्यवर ने उपयोगी बताते हुए कहा--'यह कार्य आगे से आगे चलता रहे।' आचार्यप्रवर ने अपने मूल प्रवचन में मंगल की विस्तृत चर्चा करते हुए उस धर्म को सर्वोत्कृष्ट मंगल बताया, जिसके अहिंसा, संयम व तप अंग हैं।' कार्यक्रम का संचालन श्री सोहनलाल तातेड़ ने किया।

शक्ति की होती है पूजा

२३ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने कहा--'भीतर जाने के लिए साधना के अनेक मार्ग हैं। व्यक्ति चयन करे कि उसके लिए कौन-सा मार्ग श्रेयस्कर है। साधना में संलग्न साधक के लिए वात, पित्त, कफ का संतुलन आवश्यक होता है। खाद्य संयम रखने वाला व अस्वाद वृत्ति पर विजय पाने वाला साधक साधना में प्रगति कर सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में शक्ति की पूजा होती है। शरीर से स्थूल या कृश होना इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है व्यक्ति का शक्तिशाली होना। तनबल, वचनबल, मनोबल, धनबल, जनबल आदि अनेक प्रकार के बल होते हैं। जिसमें तेज है, वह बलवान है। बलवान को प्रतिष्ठा मिलती है। शक्तिशाली व्यक्ति दूसरों का भला भी कर सकता है और बुरा भी। शक्ति तो एक तीखी धार है। यह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वह उसका उपयोग कहां पर करे? सम्यक् कार्य में आदमी पुरुषार्थ करे, तप व संयम में पराक्रम करे। सज्जन व्यक्ति दूसरों की समस्याओं का समाधान करता है, वह दूसरों के लिए समस्या नहीं बनता। वह अपने ज्ञान के आलोक से दूसरों के अज्ञान तिमिर को नष्ट कर देता है। सज्जन व्यक्ति पैसे का सही उपयोग करता है। दुर्जन अपनी शारीरिक शक्ति का उपयोग दूसरों को कष्ट देने में, उनका अहित करने में करता है। वह पैसे का अहंकार करता है। अपेक्षा है सभी अपनी शक्ति का संचय कर उसे सही दिशा में नियोजित करने का प्रयत्न करें।'

१६ अक्टूबर को प्रारंभ हुए आध्यात्मिक अनुष्ठान का आज समापन हुआ। प्रतिदिन पूज्यप्रवर द्वारा निर्धारित मंत्रों का सस्वर पाठ हुआ। पंडाल में उपस्थित लोग इस अनुष्ठान में संभागी बने।

२२-२४ अक्टूबर तक चली 'जैनदर्शन, विज्ञान और साहित्य' विषयक संगोष्ठी के सभी सत्रों में आगम मनीषी प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी की सतत व सक्रिय उपस्थिति रही। संभागियों को मुनिश्री का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। टेक्निकल सत्रों में देश के लगभग पचास विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर पत्र वाचन किया। प्लेनरी सत्रों में प्रश्नोत्तरों के माध्यम से विस्तृत चर्चा चली। दो कार्यशालाओं का भी आयोजन हुआ। पहली कार्यशाला में जैनधर्म में शोध की संभावना व दूसरी में व्यापक प्रचार-प्रसार के संदर्भ में गहन चिंतन-मंथन हुआ।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्रीमती इलायचीदेवी बोरड़ (धर्मपत्नी-श्री सोहनलालजी बोरड़) का प्रभावक संथारे में स्वर्गवास हो गया। १२ जुलाई को दस दिन की संलेखना में आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार साध्वी मधुस्मिताजी से उन्होंने तिविहार संथारा स्वीकार किया। २८ अगस्त को साध्वीश्री से चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया। २९ अगस्त को लगभग छब्बीस घंटे के चौविहार संथारे में उनका स्वर्गवास हो गया। सरदारशहर के श्री सुमेरमलजी बुच्चा की सुपुत्री श्रीमती इलायचीदेवी पिछले

काफी समय से हृदय रोग व अन्य जटिल बीमारियों से आक्रान्त थीं। उनके मन में देव, गुरु, धर्म के प्रति अटल श्रद्धा का भाव था। संथाराकाल में पूरे घर का वातावरण धर्ममय व भक्तिमय बना रहा। श्रावक समाज के साथ अन्य जाति व वर्ग के लोगों का तांता-सा लगा रहा। संथारे के उपलक्ष्य में लगभग २४०० लोगों ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान किए। संथारे से धर्मसंघ की बहुत प्रभावना हुई। साध्वी मधुस्मिताजी आदि साध्वियों का योग उन्हें प्रतिदिन मिलता रहा। ज्ञात हुआ है--अंतिम यात्रा के समय सरदारशहर मार्केट बन्द रहा।

- सरदारपुरा-जोधपुर निवासी श्री छगनराज तातेड़ का निधन हो गया। संघ व संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित तातेड़जी का जीवन सरल व सात्विक था। प्रवचन-श्रवण, सायं प्रतिक्रमण व पांच सामायिक उनके नित्यप्रति के नियम थे। १९८४ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का जोधपुर चतुर्मास इन्हीं के मकान में हुआ। इनके परिवार द्वारा निर्मित तातेड़ भवन में साधु-साध्वियों का प्रवास होता रहता है।
- जोधपुर निवासी कटक प्रवासी श्री दीवानसिंह भण्डारी का देहान्त हो गया। कटक तेरापंथी सभा के वर्षों तक अध्यक्ष रहे भण्डारीजी के तीस वर्षों से जमीकन्द व बारह वर्षों से रात्रि भोजन का त्याग था। सामायिक, जप आदि का नियमित क्रम था। प्रतिवर्ष सपत्नीक केन्द्र की लंबी उपासना करते थे। संघ व संघपति के प्रति समर्पित, शान्त व संयत स्वभावी एवं साहसी भण्डारीजी ने तेरापंथ भवन की भूमि को अवैध कब्जाधारियों से मुक्त करवाया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विमलादेवी धर्मपरायण श्राविका है।
- जोरावरपुरा-नोखा निवासी श्रीमती पारूदेवी बुच्चा (धर्मपत्नी-स्व.सिरेमलजी बुच्चा) का लगभग छह घंटे के तिविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। इसमें शासनश्री साध्वी राजकुमारीजी की प्रेरणा रही। उनके प्रतिदिन सामायिक, जप आदि का अच्छा क्रम था। संथराकाल में उन्हें श्रद्धेय आचार्यप्रवर का पावन सन्देश प्राप्त हुआ। वह निष्ठाशील व क्रियाशील श्राविका थीं। चारित्रात्माओं को व्रत निपजाने की बलवती भावना रहती थी।
- सरदारशहर निवासी श्रीमती मनोहरीदेवी सुराणा (धर्मपत्नी-श्री शुभकरण सुराणा) का देहावसान हो गया। वह स्व. घेवरमुनि के संसारपक्षीय अनुज की पत्नी, मुनि जम्बूकुमारजी व साध्वी संयमप्रभाजी की चाची व साध्वी इन्दुयशाजी की संसारपक्षीया मातुश्री थीं। संयोग कुछ ऐसा बना कि श्रीमती मनोहरीदेवी का सरदारशहर व इनकी संसारपक्षीया बहन साध्वी कुशलरेखाजी का एक ही दिन व एक ही समय में देहावसान हुआ तथा सायं एक ही समय में अन्तिम यात्रा निकली। उनके प्रायः रात्रि भोजन का परित्याग रहता था।

श्रेणी आरोहण का आदेश

२४ अक्टूबर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने ५ नवम्बर को जसोल में समायोज्य दीक्षा समारोह हेतु समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी को श्रेणी आरोहण का आदेश प्रदान किया है। इस समारोह हेतु पूज्यवर द्वारा अब तक घोषित दीक्षाएं इस प्रकार हैं--

श्रेणी आरोहण :-
१. समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी (कालू)
२. समणी ज्ञानप्रज्ञाजी (बायतू)
३. समणी अचलप्रज्ञाजी (समदड़ी)
४. समणी लावण्यप्रज्ञाजी (जसोल)
५. समणी समताप्रज्ञाजी (जसोल)

मुनि दीक्षा :-
१. मुमुक्षु धीरज (तोसाम)
२. मुमुक्षु पुनीत (बालोतरा)
३. मुमुक्षु प्रतीक (भीलवाड़ा)
४. मुमुक्षु रौनक (पचपदरा)
५. मुमुक्षु धीरज (पचपदरा)

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 27-10-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

साध्वी दीक्षा :-
१. मुमुक्षु कविता (जसोल)
२. मुमुक्षु खुशबू (जसोल)
३. मुमुक्षु भावना बी.(जसोल)
४. मुमुक्षु पूजा (जसोल)
५. मुमुक्षु मोक्षा (जसोल)
६. मुमुक्षु ज्योति (पचपदरा)

समणी दीक्षा :-
१. मुमुक्षु मर्यादा (जसोल)
२. मुमुक्षु शीतल (चेन्नई)
३. मुमुक्षु प्रेक्षा (आसोतरा)
४. मुमुक्षु भावना (जसोल)

पूज्यप्रवर द्वारा नवीन घोषणाएं

२५ अक्टूबर। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम में अग्रांकित घोषणाएं की--

- सुदीर्घ यात्रा के पश्चात थली (बीकानेर संभाग) का प्रथम मर्यादा महोत्सव बीदासर में करने का भाव है।
- गुरुदेव तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के दौरान बीदासर में दीक्षा समारोह करने का भाव है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

१५०००/- स्व. श्री प्रतापसिंहजी सिंघी (सुपुत्र-स्व. श्री सोहनलालजी सिंघी-श्राविकारत्न श्रीमती माणकदेवी सिंघी, सुजानगढ़) की द्वितीय पुण्यतिथि पर श्रीमती कमलादेवी सिंघी, सुजानगढ़ (राज.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती इच्छनीदेवी (धर्मपत्नी-स्व. श्री मदनलालजी सामसुखा, राजगढ़) की चौथी पुण्यतिथि (१५ अक्टूबर) पर उनके सुपुत्र दुलीचन्द, शोभाचन्द, गणेशमल, भूपेन्द्रकुमार सामसुखा, राजगढ़-कोलकाता-मदुरै-तिरुपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सेनफ्रांसिस्को (यू.एस.ए.) में नूतन गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में सुभाष-शोभना डागा (सुपौत्र एवं पौत्रवधू श्री दीपचन्दजी गिन्नीदेवी डागा, सरदारशहर-जयपुर एवं सुपुत्र व पुत्रवधू मदन-सज्जन डागा, शिवाकाशी) उनके अनुज ऋषि (लन्दन) एवं गौरव डागा (दिल्ली) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सूरजदेवी संचेती (धर्मपत्नी-स्व. श्री माणिकचन्दजी संचेती, मोमासर-दिल्ली-कालीकट) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र शिखरचन्द, देवचन्द, केसरीचन्द, भरत, अशोक संचेती द्वारा प्रदत्त।

विज्ञप्ति के जिन सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे आजीवन शुल्क २१०० रुपये, त्रैवार्षिक शुल्क ७०० रुपये अथवा वार्षिक शुल्क २५० रुपये हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय में जमा कराएं। शुल्क अपने यहां पंजाब नेशनल बैंक की शाखा में आदर्श साहित्य संघ के एकाउंट नं. ०१३३०००१००३६८३५६ में भी जमा करा सकते हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**